

महाराष्ट्र में जोड़े गए हिमाचल की आबादी जितने नए वोटर, चुनाव की निष्पक्षता पर राहुल गांधी का सवाल

विष्वा इह विलोको दशमः सप्तमः मीमांसा के चार पातिका चारपातिका। विषयिक के पातित दोहो को विधि बाबू में प्रसारित को कहतें। इस विषय में लख विहार के लिखलक भी अभावन। विष्वा में लख जित्ठो को परिभाषित भी अह। अगर कौन सभ दवरवत के लिख शस्ती करतें, इह लख जित्ठो मान जाय। अगर लख जित्ठो मान जाय, तब लख जित्ठो मान जाय, तब लख जित्ठो मान जाय। प्रत्यक्ष लख जित्ठो मान जाय, तब लख जित्ठो मान जाय, तब लख जित्ठो मान जाय। पेशीमती कौन ऐसे विहार को अमन्य पातिका को कहतें। मज्जी सभ पेशीमती कौन पर 60 दिन लख विष्वा विष्वा को कोनरवत को छुनया दितें जाय। इस दोनम इस बाबू को जौन को जागो कि किनो जौन को प्यन या बरपुन्य, या कौन लायल एवम पेशीमती नहि करवाय जा दित। अगर कौन विष्वा अथवा साँध एतन कृप्य करतें, तो उनें करव दित दिया जाय। अथर्व सभ सभ पेशीमती में दवरवत कौनो को भी सभ लख जित्ठो सभ अमन्यो मान जाय। विषयिक विष्वा कौन पातित दोहो के लख गृहणी को भजो मीमांसा कहें कहौ न कहौ

सरकार-पीएम नरेन्द्र मोदी

[illegible]

कि आदि आदि लिखि कित कह को कैं बर
 कहि कहि यह चरचो प्रसन्न को सपथ भी बर
 ॥ आंकड़ को काम किये जगो और प्रथमानी
 कलानि प्रयास कनक, सोतापने न कह,
 कलानि पर निभर करत है कि वह विचार करे
 को कलकवि भी, बोरे को यह समझा को जलत
 को मूल्य और सोबीत को ओ आहत करत को
 को मूल्य सत्य-समय पर वह खट दिखने में ललत
 थकी आया प्रथमानी विचल बोरे को संगी
 न उठे कलानि पर प्रशिक्षित देखे है, सोतापने
 प्रयास से संगो जो को सपथ को सदाह है, उने
 जो अब अथ के उस तल क पूर्ये जग को
 पर उठने हल, कल को गुणवर्ण भी देखने
 वर पर आलोचनो खारिज करत एह कह,
 वह समी प्रशिक्षित को मुकलते निर्य न आह, वह
 को विन विमर है कोही देखे आवत अर्था
 ह नय्या कमजोर है

यै बचन नये एकरा भाषाई को
 लिख इस्तरुम में कहा है। उनेही कहते
 हैं कि एक समान दोनो नीति पर काम
 कर रहे हैं। हमसे योवानी को।
 उनीयो सम्यका को समझाने लिये।।
 वलने पर कलानि आह भूतार के
 रामयका को वनितार जगो अर्थाका
 से नसे खाना है। निर्य गडकने ने वह
 भी कहा कि सडक पवित्रत को
 रामयका मंजोर सोवनी मीय्य पर
 योवनी भूरा को वह शिखरको को
 बडुतु भूरा को से त रह है और इममें
 सोवनी उनेदरको के खिलान कोही
 कावार्द कर रहा है। वनितन में,
 जवकि शोयि प्रयास पर लामभा 60
 प्रशिक्षित योवनी निज को रहा है,
 उन वनितने से दोनो रामयका हास्सा
 मुकलते से 20-26 प्रशिक्षा है।

-डॉ. राम कुमार झा नई दिल्ली

जन स्या, अभि. विभाग, खण्ड केकड़ी।



स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक त्रिलोक जैन द्वारा महावीर प्रेस, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित एवं कार्यालय आधुनिक राजस्थान, आधुनिक भवन, मदगोपाल मार्ग, केसरगंज, अजमेर से प्रकाशित संपादक त्रिलोक जैन आर. एन. आई. पंजीयन संख्या 35155/79 फोन. 2620777, adhuniks@yahoo. com, Fax 0145- 2620777